नाम	-	डॉ. मोती लाल शाकार
महाविद्यालय का नाम	-	दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
संकाय	-	कला
पदनाम	-	सहायक प्राध्यापक
विषय	-	भाषाविज्ञान
शीर्षक	-	समाजीकरण और भाषा

समाजीकरण और भाषा

डॉ. मोती लाल शाकार
सहायक प्राध्यापक
भाषाविज्ञान विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसका व्यक्तित्व, उसका चिंतन, उसके जीवन-मूल्य और उसका व्यवहार - सभी कुछ उसके सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अनुरूप होते हैं। दूसरी ओर, समाज का निर्माण भी मनुष्य के बीच स्थापित हुए संबंधों से होता है। समाज और मनुष्य को जोड़ने का काम भाषा करती है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य समाज और संस्कृति को अपनाता है और फलस्वरूप समाज से जुड़ता है। मनुष्य और समाज के जुड़ने की यह प्रक्रिया समाजीकरण (Socialization) कहलाती है। समाजीकरण के प्रभाव से मनुष्य एक विशिष्ट दिशा में, विशिष्ट ढंग से भाषिक और सामाजिक व्यवहार करता है।

भाषा और समाज-संस्कृति के इस अनूठे संबंध ने बहुत-से समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और भाषाविदों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। इस दृष्टि से भाषाविज्ञान के क्षेत्र में बेसिल बर्नस्टीन का काम प्रारंभिक होते हुए भी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने लंदन के मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय बच्चों की भाषा में वाक्य-संरचना और अर्थ के स्तर पर पाए जाने वाले अंतरों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन किया है। उनसे पहले इसी दिशा में फाइज़ तथा शाजमान एवं स्ट्रास ने भी कुछ अध्ययन किए थे।

भाषाविदों के अलावा सामाजिक विज्ञानों (Social sciences) के भी कई विचारकों और उनकी कृतियों से बर्नस्टीन के अध्ययन को प्रेरणा मिली। बर्न-

स्टीन के सिद्धांतों को समझने के लिए पहले उन प्रेरणास्रोतों की चर्चा कर लेना आवश्यक है।

दुर्खेम भाषा की प्रतीकात्मक व्यवस्था, सामाजिक संबंधों और अनुभवों के गठन के परस्पर संबंध पर प्रकाश डालते हैं और यह दिखाने का प्रयत्न करते हैं कि मनुष्य के सामाजिक संबंधों की संरचना जैसी होगी, मूलतः वैसा ही उसका चिंतन होगा। दूसरी ओर केसिरेर और सपीर भाषा के सांस्कृतिक तत्त्वों को समझने की दिशा में बर्नस्टीन को एक नयी दृष्टि देते हैं। वोर्फ़ व्याकरण की संरचना पर पड़ने वाले सांस्कृतिक प्रभावों की वात करते हैं।

बर्नस्टीन ने भाषा की प्रतीकात्मक व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था के अंतस्संबंध का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन किया। यहाँ जिस प्रतीकात्मक व्यवस्था की बात कही जा रही है वह भाषा (Language) की नहीं बल्कि वाक् (Speech) की प्रतीकात्मक व्यवस्था है। इस मुद्दे पर चॉम्स्की की भाषिक क्षमता और भाषिक व्यवहार-संबंधी अवधारणाओं का खंडन करते हुए बर्नस्टीन कहते हैं कि चॉम्स्की के मतानुसार भाषिक क्षमता और भाषिक व्यवहार दो अलग-अलग चीजें हैं। भाषिक क्षमता किसी भी भाषा की नियम-व्यवस्था का अन्तर्हित ज्ञान है; यह संदर्भमुक्त होता है तथा भाषा की आदर्श स्थिति की ओर संकेत करता है। दूसरी ओर, भाषिक व्यवहार अन्र्ताहत नियम-व्यवस्था का सामाजिक प्रयोग है; यह सामाजिक संदर्भों से बँधा होता है तथा भाषिक क्षमता की विकृत (Degenerated) स्थिति है। क्षमता के अध्ययन पर बल देने के पीछे चॉम्स्की का यही उद्देश्य है कि भाषिक नियमों और सामाजिक नियमों के संबंधों को नकारा जाए। लेकिन बर्नस्टीन चॉम्स्की से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार, व्याकरण के तत्त्वत्रों को समझाने के लिए भाषाविद् जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, वह अनेक भाषा-कोडों (Speech codes) से मिलकर बनी होती है और भाषा-कोड संदर्भसापेक्ष होती है। इस प्रकार भाषा नियमों का ऐसा सेट है जिसमें सभी भाषा कोडों के

नियमों का समावेश होता है। किंतु कब किस कोड का प्रयोग करना है, इस बात का निर्णय संस्कृति और समाज द्वारा होता है, भाषा के व्याकरण द्वारा नहीं। दूसरे शब्दों में, मनुष्य जब भाषा के माध्यम से संस्कृति को अपनाता है तो एक विशेष ढंग से, एक विशेष दिशा में सामाजिक व्यवहार करना सीखता है। यही उसकी समाजीकरण प्रक्रिया है। इसी विशिष्ट समाजी-करण प्रक्रिया की बदौलत वह विशिष्ट ढंग से भाषिक व्यवहार करना भी सीखता है। इस प्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति को एक विशिष्ट संस्कृति, विशिष्ट समाज से जोड़कर उस समाज का सदस्य बनाती है।

समाजीकरण प्रक्रिया के चार मुख्य स्रोत हैं: परिवार, समवयस्क वर्ग (Peer group), विद्यालय और जीविकोपार्जन के लिए किया जाने वाला काम । बर्नस्टीन ने अपने अध्ययन को परिवार के माध्यम से होने वाले समाजीकरण तक ही सीमित रखा है। लेकिन परिवार के माध्यम का अध्ययन अलग करके स्वतंत्र रूप से करना संभव नहीं, क्योंकि परिवार का गठन काफ़ी हद तक सामाजिक वर्ग से प्रभावित होता है। व्यक्ति समाज के जिस वर्ग का सदस्य होता है, उसकी शिक्षा, उसका व्यवहार और परिवार के सदस्यों में आपसी संबंध वर्ग-विशेष की परंपराओं से प्रभावित होता है। परिवार के सदस्यों का एक विशेष ढंग से एक-दूसरे से जुड़ना ही सामाजिक वर्ग (Social class) की संकल्पना को जन्म देता है) समाज के सदस्य जितने ढंगों से अपने परिवार से, प्रयोग करने लगता है।